सिटी लाइट्स : चार्ली की श्रेष्ठ फ़िल्म

अरविंद कुमार

सी–18 चंद्रनगर,
ग़ाज़ियाबाद– 201011
मो. 9811127360

नहरों के नगर वेनिस (इटली) में गतिविधि का केंद्र पिआज़ा सान मार्को तीन सितंबर 1972 की अनोखी शाम मेरे मन में आज तक अंकित है।

इटली, नहरों वाला सुंदर नगर वेनिस, शानदार पिआज़ा सान मार्को चौक (संत मार्क) खुले आसमान के नीचे सैकड़ों कुरसियाँ बिछी हैं। उत्सुक और उत्तेजित दर्शक, उनमें से एक मैं, सामने है एक बहुत बड़ा सफेद परदा।

यह है उस साल के वेनिस फ़िल्म फेस्टिवल का समापन समारोह। सब के लिए खुला। दाहिनी ओर पहली मंज़िल पर खिड़की से इटली की रानी के साथ हैं चार्ली चैपलिन। दोनों, हमें और चार्ली की फ़िल्म सिटी लाइट्स देखेंगे।

बत्तियाँ बुझती हैं। फ़िल्म और चार्ली के सम्मान में तालियाँ गड़गड़ा उठती हैं। फ़िल्म में सुबह सुबह शांति और समृद्धि की देवी के कई मूर्तियों वाले स्मारक का लोकार्पण, एक संभ्रात महिला डोरी खींचती है। स्मारक को ढँकने वाला बड़ा परदा नीचे गिरता है। यह क्या? चार्ली चैपलिन का पात्र ट्रैंप मुख्य मूर्ति की गोदी में आराम से सोया है!

और अब जो तालियों की गड़गड़ाहट शुरू होती है, तब दुगुनी होती जाती हैं जब चार्ली की पहली मुलाक़ात होती है अंधी फूलवाली से। और तब तक चलती रही जब अनेक रोचक घटनाओं के बाद अंधेपन से मुक्त फूल वाली चैपलिन को पहचान नहीं पाई। जैसे ही दोनों के हाथ मिले तो फूल वाली को सब कुछ याद आ जाता है।

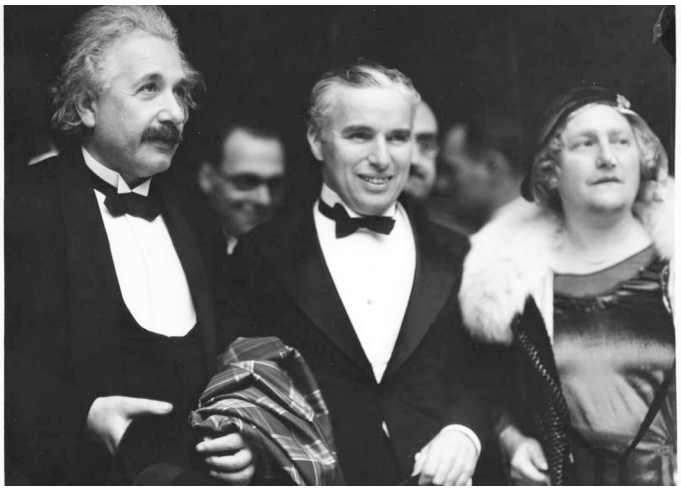

■ सिटी लाइट्स के प्रीमियर पर सपत्नीक अल्बर्ट आइंस्टाइन, बीच में चार्ली

तमाम बत्तियाँ जलती हैं। दाहिने बाल्कनी में से चार्ली और रानी हाथ हिला कर दर्शकों का सम्मान कर रहे हैं। चार्ली, रानी और दर्शक, सब की आँखें नम हैं।

यह था उस शाम का वर्णन अब देखिए पूरी फिल्म

शहर की सड़कों के सचल चित्रों पर उभरता है फ़िल्म का नाम।

सुबह, सड़क पर दर्शकों की भारी उपस्थिति। सामने है सड़क का अंत। कपड़े के परदों से ढँकी कोई चीज़। सिनेमा के परदे पर लिखा आता है - नगरवासियों की सेवा में समर्पित है शांति और समृद्धि का स्मारक। धुआँधार भाषण हो रहा है। उद्घाटन के लिए एक महिला को आमंत्रित किया जाता है वह डोरी खींचती है। परदा नीचे को गिरता है।

हम देखते हैं सब से ऊँची मूर्ति पर कोई सोया है। यह चार्ली चैपलिन का लोकप्रिय पात्र ट्रैंप है, जो सिर खुजाता है, टाँग उठाता है, खुजाता है।

हैरान दर्शक उठ खड़े होते हैं। उन्हें बैठाया जाता है। राष्ट्रगान शुरू होता है। सब सावधान मुद्रा में खड़े होते हैं। नीचे वाली मूर्ति की तलवार ट्रैंप की पतलून को चीरती ऊपर निकल गई है। सब उसे उतरने को कह रहे हैं। जैसे तैसे तलवार से निकल पाता है। जूते का तस्मा बाँधता है। हड़बड़ाता गिरता पड़ता फंसता ट्रैंप नीचे उतर पाता है। इस दृश्य से जो स्थापित होता है वह यह कि बेघरबार निर्धनों के लिए आलीशान स्मारक मात्र शरणस्थल हैं।

तीसरा पहर। बाज़ार। चहलपहल। कारें आ जा रही हैं। ट्रैंप भी मटरगश्ती कर रहा है। मोड़ पर अख़बार बेचने वाले दो छोकरे उसे छेड़ते हैं। उन्हें फटकारता